सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 1/2018

दिनांक : 01/01/2018

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

प्रिय साथियों ,

विषय : स्वागतम् वर्ष 2018

नया साल 2018 का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए हम मध्यक्षेत्र के तमाम बीमा कर्मियों के अलावा देश और दुनिया के समस्त मेहनतकश वर्ग को हदय से क्रांतिकारी अभिवादन तथा शुभकामनाएं, सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन की ओर से प्रेषित करते है।

वर्ष 2017 के बिदाई की इस बेला में एवं नववर्ष 2018 के आगमन की इस घड़ी में मेहनतकश वर्ग की हैसियत से बीते वर्ष का मूल्यांकन करना लाजिमी हो जाता है। केवल हमारे उद्योग एवं अपने संगठन का विश्लेषण, अवलोकन तथा आत्ममंथन पर्याप्त नही है बल्कि साथ ही साथ देश एवं दुनियां में हो रहे घटनाक्रमों, का भी हमें गहन चिंतन करना होगा। क्योंकि गुजरे हुए वर्ष की बुनियाद पर ही नये वर्ष का आगमन हो रहा है ।

वैश्विक स्तर पर अगर हम नजर डाले तो वर्ष 2017 काफी उथल-पुथल भरा रहा है। फासीवादी ताकतें, जो पूंजीवाद की ही मूल प्रवृत्ति की देन है, भी उभर रही हैं। अमरीका में ट्रंप की जीत और उसकी नीतियों के साथ पूंजीवादी संकट से बढ़ती असमानता से करना उपजे असंतोष का लाभ दक्षिणपंथी ताकतें उठा रही हैं। साम्राज्यवाद के आपस का टकराव और भी तीखा हुआ है। इसके अलावा आतंकवाद भी विकसित हुए हैं। मगर यह भी उतना ही सच है कि इन ताकतों के खिलाफ दुनिया के पैमाने पर विरोध के स्वर भी गूंज रहे हैं। दुनिया में हजारों लाखों ऐसे लोग है जो भूख से अपनी जान गंवाने बाध्य हैं। Global Hunger Index में इस बात को रेखांकित किया है कि अनाज की कमी, कुपोषण के शिकार लोगों की संख्या पहले की तुलना में बढ़ता ही जा रहा है। दुनियां मे असमानता की खाई और चौड़ी होते जा रही है। अरबपतियों की संख्या मे जहां लगातार वृद्धि हो रही है वहीं गरीबी की सीमा से नीचे रहने वालों की तादात में भी इजाफा हो रहा है। इन सबके बीच इस बात के लिये भी याद किया जायेगा बीता वर्ष 2017 जिसे हम नजरअंदाज नही कर सकता, वह है अक्टूबर क्रांति का शताब्दी वर्ष। 1917 मे सोवियत संघ समाजवादी राष्ट्र के रूप मे दुनिया के मानचित्र में स्थापित हुआ और समाजवादी व्यवस्था से क्या हासिल हुआ, इसे आज समझने की अत्यधिक जरूरत है। एक ओर पूंजीवादी व्यवस्था में, गरीबी, बेरोजगारी,आर्थिक असमानता, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के स्तर में भारी गिरावट कुपोषण आंतकवाद, तानाशाही प्राप्त होता है। वहीं दूसरी ओर समाजवादी व्यवस्था मे इंसान को इंसान का दर्जा मिलता है, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिये दर-दर की ठोकरें खानी नहीं पड़तीं, शिक्षित युवाओं के लिये रोजगार प्राप्त करना समस्या नहीं होती, किसानों की स्थिति काफी मजबूत रहती। इन सबके बावजूद समाजवादी सोवियत रूस का पतन हुआ लेकिन आज उन्हें भी सोचने के लिये मजबूर होना पड़ रहा है कि हमने क्या खोया और क्या पाया।

जहाँ तक राष्ट्रीय परिदृश्य पर हम गौर करें तो हम स्पष्ट रूप से देख रहे है कि, देश की हालत बद से बदतर होते जा रही है। लोकतंत्र खतरे में नजर आता है। सांप्रदायिक ताकतें लगातार सिर उठाते जा रहे हैं। देश की अर्थनीति हमें महंगाई और

बेरोजगारी के अपने चरम स्थिति की ओर ले जा रही है, देश में स्वास्थ्य और शिक्षा का हाल बेहाल है। लेकिन इन परिस्थितियों में भी देश का मजदूर, किसान, छात्र नौजवान श्रमिक संगठनें अपनी जिम्मेदारी को भूल नहीं रहे हैं इसका ज्वलंत उदाहरण हमे दिल्ली में आयोजित 9, 10 एवं 11 नवंबर 2017 के महापड़ाव के रूप में दिखाई देता है। लाखों की संख्या में देश के विभिन्न श्रम संगठनो की ओर से आयोजित इस महापड़ाव से देश की सरकार को स्पष्ट चेतावनी दी गयी कि अब और बर्दास्त नहीं किया जायेगा, चाहे वह चिकित्सा, शिक्षा का मामला हो, चाहे वह रोजगार से संबधित हो या न्यूनतम मजदूरी का सवाल हो, या फिर किसानों को इनके उपज का उचित मूल्य से संबंधित मसला ही क्यों न हो।

महापड़ाव से ऐलान किया गया कि यह जनआंदोलन और तेज किया जायेगा जब तक हम केन्द्र सरकार से अपनी जायज मांगो को प्राप्त नहीं कर लेते लड़ाई जारी रहेगी इस 2017 में कई राज्यों में विधानसभा के चुनाव भी संपन्न हुये अधिकांश मे भाजपा को सफलता भी मिली लेकिन 2014 के चुनाव में मिली सफलता में गिरावट भी हुई। देश की जनता से किये गये वादों को जुमले में बदलकर नोटबंदी, जीएसटी अब एफ आर डी आई कानून की कोशिश, अर्थव्यवस्था में गिरावट से मजदूर किसान की बदहाली की केन्द्र की नीतियों से जनता की नाखुशी भी उभर रही है। असंतोष के स्वर उभर रहे हैं, युवा बेरोजगार ठगे महसूस कर रहे हैं। किसान आत्महत्या के लिये बेबस है, चिकित्सा के अभाव में मासूम बच्चे मौत के शिकार हो रहे है, इसका जीता जागता उदाहरण गोरखपुर है। धर्म और जाति के नाम लोगों को उकसाने का काम तीव्र गति से जारी है, राष्ट्रवाद के नाम पर ऊल-जुलूल कुतर्क पेश किया जा रहा है। उन्हीं सब के बीच 2017 का वर्ष गुजरा है उन परिस्थितियों को बदलने के लिये व्यापक वर्गीय एकताबद्ध सतत संघर्ष की आवश्यकता है।

बीते वर्ष 2017 में हम अपने उद्योग की ओर निगाह डालें तो पाते हैं कि आज भी सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय जीवन बीमा निगम और आम बीमा निगम का कोई मुकाबला नहीं है, वर्ष दर वर्ष व्यवसायिक स्तर पर हम प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं लेकिन ये भी उतना ही सच है कि वर्तमान सरकार इस उद्योग को किसी न किसी रूप में कमजोर करने की कोशिश कर रही है। आम बीमा में विनिवेशीकरण की मुहिम थोप दी गई। बीमा उद्योग में नई भर्ती वर्षों से बंद है। कार्य का बोझ लगातार बढ़ता ही जा रहा है लेकिन नई भर्ती नहीं हो पा रही है इसके बावजूद भारतीय जीवन बीमा निगम के व्यवसाय में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2017 का साल हमारे लिये और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इसी वर्ष 2 अगस्त 2017 को ए.आई.आई.ई.ए. की ओर से प्रबंधन को वेतन पुर्नर्धारण के लिये मांग पत्र सौंपा गया और उम्मीद करते हैं कि नये वर्ष में राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग हिफाजत के साथ ही हमारे मांगपत्र को हासिल करने संघर्षों में जुटना होगा।

निश्चय ही नया वर्ष का स्वागत हमे पूरजोर तरीके से करना चाहिए और स्वागत के साथ-साथ जो चुनौतियां हमारे समक्ष है उसके मुकाबले के लिये तन-मन-धन से संगठन को लैस कर संघर्ष के मैदान मे उतरने की वचनबद्धता उद्घोषित करनी होगी। मेहनतकश के लिये संघर्ष के सिवाय और कोई विकल्प नहीं होता। वक्त कितना भी कठिन क्यों न हो, दौर कितना भी जटिल क्यों न हो, परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हो हमें हर स्थिति मे मुकाबला करना है और उम्मीद है कि वर्ष 2018 हमारा होगा।

स्वागतम् नववर्ष।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)

महासचिव